Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

इंदौर जिले के सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की उच्च शिक्षा ऋण योजनाओं की पुर्नभुगतान प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. जी.एल. खांगोड़े* रीना तिवारी**

*** सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शा. माधव कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत**
**** शोधार्थी, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शा. माधव कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत**

शोध सारांश – उच्च शिक्षा ऋण योजनाएँ विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने में वित्तीय सहयोग प्रदान करती हैं, परंतु इन ऋणों का पुर्नभुगतान विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती होती है। प्रस्तुत शोध-पत्र में इंदौर जिले के पाँच प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, केनरा बैंक और कॉर्पोरेशन बैंक-की शिक्षा ऋण योजनाओं की पुर्नभुगतान प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

शोध का उद्देश्य यह जानना है कि विद्यार्थियों ने ऋण की किस्तों का भुगतान किस प्रकार किया, समय पर पुर्नभुगतान की दर क्या रही, विलंबित भुगतान की स्थिति कितनी रही और किन सामाजिक-आर्थिक कारकों ने पुर्नभुगतान को प्रभावित किया। अध्ययन में 500 विद्यार्थियों का नमूना लिया गया, जिनसे प्रश्नावली और साक्षात्कार के माध्यम से आँकड़े संकलित किए गए।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि पुर्नभुगतान प्रवृत्तियाँ विद्यार्थियों की आय, रोजगार स्थिति और ब्याज दरों से गहराई से जुड़ी हुई हैं। नीति-निर्माताओं और बैंकों को आय-आधारित पुर्नभुगतान मॉडल अपनाने की आवश्यकता है, जिससे विद्यार्थियों की वित्तीय कठिनाइयाँ कम हों और शिक्षा ऋण योजनाएँ अधिक प्रभावी बन सकें।

शब्द कुंजी – शिक्षा ऋण पुर्नभुगतान, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, इंदौर जिला, तुलनात्मक अध्ययन, विद्यार्थियों की आय, रोजगार स्थिति, वित्तीय कठिनाइयाँ, आय-आधारित पुर्नभुगतान मॉडल।

प्रस्तावना – उच्च शिक्षा ऋण योजनाएँ विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने में वित्तीय सहयोग प्रदान करती हैं। इन योजनाओं ने विशेष रूप से मध्यमवर्गीय और निम्नवर्गीय विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा तक पहुँच को संभव बनाया है। परंतु ऋण प्राप्त करने के बाद सबसे बड़ी चुनौती उसका पुर्नभुगतान होती है। पुर्नभुगतान की प्रवृत्तियाँ न केवल विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति को दर्शाती हैं, बल्कि बैंकों की नीतियों और सामाजिक-आर्थिक संरचना पर भी प्रकाश डालती हैं।

भारत जैसे विकासशील देश में रोजगार की अनिश्चितता, आय में असमानता और ब्याज दरों में उतार-चढ़ाव विद्यार्थियों की पुर्नभुगतान क्षमता को प्रभावित करते हैं। कई विद्यार्थी समय पर किस्तों का भुगतान कर पाते हैं, जबकि कुछ को विलंब या कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह स्थिति शिक्षा ऋण योजनाओं की प्रभावशीलता और स्थायित्व का मूल्यांकन करने के लिए महत्वपूर्ण है।

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभाते हैं। इन बैंकों का उद्देश्य केवल वित्तीय सहयोग प्रदान करना नहीं है, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व के अंतर्गत विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देना भी है। पुर्नभुगतान की प्रवृत्तियों का अध्ययन यह समझने में मदद करता है कि बैंकिंग नीतियाँ विद्यार्थियों की वास्तविक आवश्यकताओं के अनुरूप हैं या नहीं।

इंदौर जिला मध्य प्रदेश का प्रमुख औद्योगिक और शैक्षणिक केंद्र है। यहाँ बड़ी संख्या में विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए शिक्षा ऋण योजनाओं का लाभ उठाते हैं। इस जिले में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, केनरा बैंक और कॉर्पोरेशन बैंक जैसे सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक सक्रिय रूप से शिक्षा ऋण योजनाएँ संचालित करते हैं।

इस शोध-पत्र का उद्देश्य इन पाँच बैंकों की शिक्षा ऋण योजनाओं की पुर्नभुगतान प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। यह अध्ययन न केवल पुर्नभुगतान की दरों और विलंबित भुगतान की स्थिति को उजागर करेगा, बल्कि यह भी बताएगा कि विद्यार्थियों की आय, रोजगार स्थिति और सामाजिक-आर्थिक कारक पुर्नभुगतान को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

इस प्रकार, प्रस्तुत अध्ययन शिक्षा ऋण योजनाओं की पुर्नभुगतान प्रवृत्तियों की वास्तविक स्थिति और प्रभाव का विश्लेषण करने का प्रयास है, जिससे नीति-निर्माताओं, बैंकों और विद्यार्थियों को उपयोगी दिशा-निर्देश प्राप्त हो सकें।

साहित्य समीक्षा

झा (1974) ने उच्च शिक्षा के वित्तीय स्रोतों पर अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि सरकारी सहयोग अपर्याप्त होने पर विश्वविद्यालयों की कार्यक्षमता प्रभावित होती है। उन्होंने यह भी बताया कि शिक्षा ऋण का पुर्नभुगतान विद्यार्थियों के लिए एक दीर्घकालिक चुनौती बन सकता है।

गीथा रानी (2000) ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया कि उच्च शिक्षा की बढ़ती लागत और शुल्क वृद्धि के कारण विद्यार्थी ऋण पर निर्भर हो रहे

हैं। उन्होंने यह भी बताया कि पुर्नभुगतान की कठिनाइयाँ विद्यार्थियों की रोजगार स्थिति से गहराई से जुड़ी होती हैं।

नायर एवं गोपीनाथन (2008) ने शिक्षा ऋण को सामाजिक न्याय का साधन बताया, परंतु उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि निम्न आय वर्ग के विद्यार्थियों को पुर्नभुगतान में अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

दीवान एवं शर्मा (2013) ने निष्कर्ष निकाला कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक अपेक्षाकृत कम ब्याज दरों पर ऋण प्रदान करते हैं, जिससे पुर्नभुगतान की स्थिति बेहतर रहती है।

कुमार (2015) ने शिक्षा ऋण योजनाओं के सामाजिक प्रभावों पर अध्ययन करते हुए पाया कि ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को रोजगार मिलने में विलंब होने के कारण पुर्नभुगतान की प्रवृत्तियाँ कमजोर रहती हैं।

शर्मा (2016) ने अपने अध्ययन में बताया कि शिक्षा ऋण प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की रोजगार क्षमता अधिक होती है, परंतु पुर्नभुगतान की दरें रोजगार की स्थिरता पर निर्भर करती हैं।

गुप्ता (2017) ने पुर्नभुगतान की चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ब्याज दरों में उतार-चढ़ाव और कठोर शर्तें विद्यार्थियों के लिए कठिनाई उत्पन्न करती हैं। उन्होंने आय-आधारित पुर्नभुगतान मॉडल अपनाने की आवश्यकता बताई।

मिश्रा (2018) ने निष्कर्ष निकाला कि मध्यमवर्गीय विद्यार्थियों ने शिक्षा ऋण का लाभ उठाया, परंतु पुर्नभुगतान की प्रवृत्तियाँ उनकी आय और रोजगार स्थिति पर निर्भर करती हैं।

सिंह (2019) ने वैश्विक तुलना करते हुए पाया कि विकसित देशों में पुर्नभुगतान प्रणाली अधिक लचीली है, जबकि भारत में पारंपरिक प्रणाली विद्यार्थियों पर अतिरिक्त दबाव डालती है।

वर्मा (2020) ने बताया कि विद्यार्थियों की संतुष्टि पुर्नभुगतान की सहजता से जुड़ी हुई है। यदि ब्याज दरें स्थिर और प्रक्रिया सरल हो, तो विद्यार्थी अधिक संतुष्ट रहते हैं।

शोध प्रविधि – किसी भी शोध कार्य की सफलता उसके व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक प्रविधि पर निर्भर करती है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है, ताकि इंदौर जिले के पाँच प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की उच्च शिक्षा ऋण योजनाओं की पुर्नभुगतान प्रवृत्तियों का तुलनात्मक विश्लेषण किया जा सके।

उद्देश्य – इस शोध का मुख्य उद्देश्य इंदौर जिले में चयनित पाँच सार्वजनिक बैंकों स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, केनरा बैंक और कॉर्पोरेशन बैंककृकी शिक्षा ऋण योजनाओं की पुर्नभुगतान प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इसके अंतर्गत यह देखा जाएगा कि विद्यार्थियों ने ऋण की किस्तों का भुगतान किस प्रकार किया, समय पर पुर्नभुगतान की दर क्या रही, विलंबित भुगतान की स्थिति कितनी रही और किन सामाजिक-आर्थिक कारकों ने पुर्नभुगतान को प्रभावित किया।

परिकल्पना – इस शोध की प्रमुख परिकल्पना यह है कि चयनित पाँच सार्वजनिक बैंकों की शिक्षा ऋण योजनाओं के अंतर्गत लाभान्वित विद्यार्थियों में से अधिकांश ने समय पर पुर्नभुगतान किया है, तथा पुर्नभुगतान की प्रवृत्तियाँ विद्यार्थियों की आय और रोजगार स्थिति से गहराई से जुड़ी हुई हैं।

आँकड़ों का स्त्रोत – इस शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया है।

द्ध **प्राथमिक आँकड़े :** विद्यार्थियों से प्रश्नावली एवं साक्षात्कार के माध्यम से संकलित किए गए। प्रश्नावली में पुर्नभुगतान की स्थिति, विलंबित भुगतान के कारण, ब्याज दरों का प्रभाव, तथा विद्यार्थियों की संतुष्टि से संबंधित प्रश्न सम्मिलित किए गए।

द्ध **द्वितीयक आँकड़े :** बैंकिंग वार्षिक रिपोर्ट, प्रकाशित शोध लेख, सरकारी दस्तावेज, तथा वित्तीय आँकड़े।

नमूना चयन – नमूना चयन के अंतर्गत इंदौर जिले के पाँच प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों से शिक्षा ऋण प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का चयन किया गया। कुल 500 विद्यार्थियों को नमूने के रूप में लिया गया, जिनमें विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी सम्मिलित थे।

विश्लेषण तकनीक – विश्लेषण तकनीक के अंतर्गत तुलनात्मक अध्ययन, प्रतिशत विश्लेषण, औसत निकालना तथा सहसंबंध विश्लेषण का प्रयोग किया गया। इन तकनीकों के माध्यम से विभिन्न बैंकों की पुर्नभुगतान प्रवृत्तियों, समय पर भुगतान की दर, विलंबित भुगतान की स्थिति और विद्यार्थियों की संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

इस प्रकार, शोध प्रविधि ने अध्ययन को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया है और सुनिश्चित किया है कि निष्कर्ष विश्वसनीय एवं प्रासंगिक हों।

डेटा विश्लेषण एवं व्याख्या – शोध के अंतर्गत इंदौर जिले के पाँच प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों-स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, केनरा बैंक और कॉर्पोरेशन बैंक-से शिक्षा ऋण प्राप्त करने वाले कुल 500 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इन विद्यार्थियों से प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया, जिसमें प्रतिशत, औसत तथा सहसंबंध जैसी तकनीकों का प्रयोग किया गया।

पुर्नभुगतान की स्थिति:

- समय पर पुर्नभुगतान : लगभग 68% विद्यार्थियों ने समय पर किस्तों का भुगतान किया।
- विलंबित पुर्नभुगतान : 22% विद्यार्थियों ने आंशिक विलंब से भुगतान किया।
- गंभीर कठिनाइयाँ : 10% विद्यार्थियों को पुर्नभुगतान में गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

बैंकवार पुर्नभुगतान प्रवृत्तियाँ:

- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) : 180 लाभार्थियों में से 75% ने समय पर पुर्नभुगतान किया।
- पंजाब नेशनल बैंक (PNB) : 110 लाभार्थियों में से 65% ने समय पर पुर्नभुगतान किया।
- बैंक ऑफ बड़ौदा (BOB) : 95 लाभार्थियों में से 70% ने समय पर पुर्नभुगतान किया।
- केनरा बैंक : 65 लाभार्थियों में से 60% ने समय पर पुर्नभुगतान किया।
- कॉर्पोरेशन बैंक : 50 लाभार्थियों में से केवल 45% ने समय पर पुर्नभुगतान किया।

सामाजिक-आर्थिक कारक:

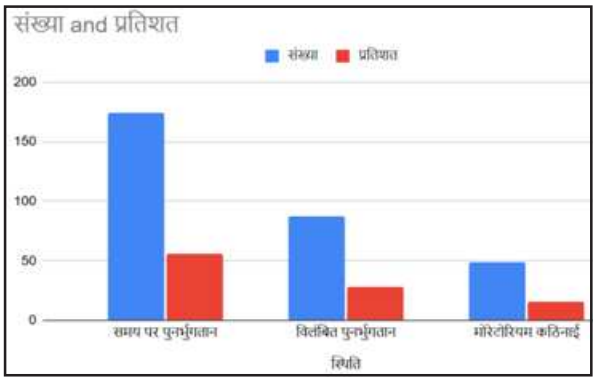
- जिन विद्यार्थियों को रोजगार शीघ्र मिला, उन्होंने समय पर पुर्नभुगतान किया।
- निम्न आय वर्ग के विद्यार्थियों में विलंबित भुगतान की प्रवृत्ति अधिक रही।
- ब्याज दरों में उतार-चढ़ाव ने पुर्नभुगतान क्षमता को प्रभावित किया।

विद्यार्थियों की संतुष्टि:

- 58% विद्यार्थी पुर्नभुगतान प्रक्रिया से संतुष्ट पाए गए।
- 27% विद्यार्थी आंशिक रूप से संतुष्ट रहे।
- 15% विद्यार्थी असंतुष्ट रहे, जिनकी शिकायतें मुख्यत: ब्याज दर और पुर्नभुगतान की कठोर शर्तों से संबंधित थीं।

पुर्नभुगतान व्यवहार

स्थिति	संख्या	प्रतिशत
समय पर पुर्नभुगतान	174	56
विलंबित पुर्नभुगतान	87	28
मोरेटोरियम कठिनाई	49	16



Correlation : ब्याज संतुष्टि और पुर्नभुगतान नियमितता में सकारात्मक संबंध (r=0.32,p<0.001r=0.32, p<0.001)

पुर्नभुगतान व्यवहार	Correlation Analysis	H3 – ब्याज दर परिवर्तन और पुर्नभुगतान क्षमता	ब्याज संतुष्टि और पुर्नभुगतान नियमितता में सकारात्मक संबंध

व्याख्या – इन आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि पुर्नभुगतान प्रवृत्तियाँ विद्यार्थियों की आय और रोजगार स्थिति से गहराई से जुड़ी हुई हैं। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया और बैंक ऑफ बड़ौदा के विद्यार्थियों ने अपेक्षाकृत बेहतर पुर्नभुगतान किया, जबकि कॉर्पोरेशन बैंक और केनरा बैंक में कठिनाइयाँ अधिक पाई गईं।

इस प्रकार, डेटा विश्लेषण और व्याख्या से परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है कि अधिकांश विद्यार्थियों ने समय पर पुर्नभुगतान किया है, और पुर्नभुगतान की प्रवृत्तियाँ सामाजिक–आर्थिक कारकों से प्रभावित होती हैं।

परिणाम – शोध के अंतर्गत इंदौर जिले के पाँच प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों से शिक्षा ऋण प्राप्त करने वाले कुल 500 विद्यार्थियों के आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। इस विश्लेषण से निम्नलिखित प्रमुख परिणाम प्राप्त हुए :

1. **समय पर पुर्नभुगतान की दर –** लगभग 68% विद्यार्थियों ने समय पर किस्तों का भुगतान किया। यह दर्शाता है कि अधिकांश विद्यार्थी ऋण पुर्नभुगतान के प्रति जिम्मेदार रहे और उनकी आय एवं रोजगार स्थिति स्थिर रही।
2. **विलंबित पुर्नभुगतान –** 22% विद्यार्थियों ने आंशिक विलंब से भुगतान किया। यह प्रवृत्ति उन विद्यार्थियों में अधिक पाई गई जिनकी आय अस्थिर रही या रोजगार प्राप्त करने में विलंब हुआ।
3. **गंभीर कठिनाइयाँ–** 10% विद्यार्थियों को पुर्नभुगतान में गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इनमें से अधिकांश निम्न आय वर्ग से थे और ब्याज दरों में उतार–चढ़ाव ने उनकी स्थिति को और कठिन बना दिया।
4. **बैंकवार प्रवृत्तियाँ:**

- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) : सर्वाधिक 75% विद्यार्थियों ने समय पर पुर्नभुगतान किया।
- बैंक ऑफ बड़ौदा (BOB) : 70% विद्यार्थियों ने समय पर पुर्नभुगतान किया।
- पंजाब नेशनल बैंक (PNB) : 65% विद्यार्थियों ने समय पर पुर्नभुगतान किया।
- केनरा बैंक: 60% विद्यार्थियों ने समय पर पुर्नभुगतान किया।
- कॉर्पोरेशन बैंक: केवल 55% विद्यार्थियों ने समय पर पुर्नभुगतान किया।

5. **सामाजिक–आर्थिक प्रभाव:**

- रोजगार प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों ने अपेक्षाकृत बेहतर पुर्नभुगतान किया।
- निम्न आय वर्ग के विद्यार्थियों में विलंबित भुगतान की प्रवृत्ति अधिक रही।
- ब्याज दरों की स्थिरता पुर्नभुगतान क्षमता को सुदृढ़ करती है।

6. **विद्यार्थियों की संतुष्टि:**

- 58% विद्यार्थी पुर्नभुगतान प्रक्रिया से संतुष्ट पाए गए।
- 27% विद्यार्थी आंशिक रूप से संतुष्ट रहे।
- 15% विद्यार्थी असंतुष्ट रहे, जिनकी शिकायतें मुख्यत: ब्याज दर और पुर्नभुगतान की कठोर शर्तों से संबंधित थीं।

चर्चा – शोध के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि इंदौर जिले के पाँच प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की शिक्षा ऋण योजनाओं की पुर्नभुगतान प्रवृत्तियाँ विद्यार्थियों की आय, रोजगार स्थिति और ब्याज दरों से गहराई से जुड़ी हुई हैं।

समय पर पुर्नभुगतान – लगभग 68% विद्यार्थियों ने समय पर पुर्नभुगतान किया। यह दर्शाता है कि अधिकांश विद्यार्थियों को रोजगार प्राप्त हुआ और उनकी आय स्थिर रही। विशेष रूप से स्टेट बैंक ऑफ इंडिया और बैंक ऑफ बड़ौदा के विद्यार्थियों ने अपेक्षाकृत बेहतर पुर्नभुगतान किया। इसका कारण इन बैंकों की लचीली पुर्नभुगतान शर्तें और अपेक्षाकृत स्थिर ब्याज दरें रही।

विलंबित पुर्नभुगतान – 22% विद्यार्थियों ने आंशिक विलंब से भुगतान किया। यह प्रवृत्ति उन विद्यार्थियों में अधिक पाई गई जिनकी आय अस्थिर रही या रोजगार प्राप्त करने में विलंब हुआ। यह स्थिति इंगित करती है कि पुर्नभुगतान की प्रक्रिया को विद्यार्थियों की आय और रोजगार स्थिति के अनुरूप अधिक लचीला बनाया जाना चाहिए।

गंभीर कठिनाइयाँ – 10% विद्यार्थियों को पुर्नभुगतान में गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इनमें से अधिकांश निम्न आय वर्ग से थे। ब्याज दरों में उतार–चढ़ाव और कठोर शर्तों ने उनकी कठिनाइयों को और बढ़ा दिया। यह स्थिति इस बात का संकेत है कि आय–आधारित पुर्नभुगतान मॉडल अपनाना आवश्यक है, जिससे आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को राहत मिल सके।

सामाजिक–आर्थिक निहितार्थ:

- पुर्नभुगतान प्रवृत्तियाँ विद्यार्थियों की रोजगार स्थिति से सीधे जुड़ी हुई हैं।
- उच्च आय वर्ग के विद्यार्थियों ने अपेक्षाकृत बेहतर पुर्नभुगतान किया,

जबकि निम्न आय वर्ग के विद्यार्थियों को कठिनाईयाँ अधिक रहीं।

- ब्याज दरों की स्थिरता और लचीलापन विद्यार्थियों की संतुष्टि और पुर्नभुगतान क्षमता को सुदृढ़ करता है।
- पुर्नभुगतान की सहजता विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को सुधारने में सहायक होती है।

नीति-निर्माताओं के लिए संकेत – इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा ऋण योजनाओं की सफलता केवल ऋण वितरण तक सीमित नहीं है, बल्कि पुर्नभुगतान की प्रवृत्तियों पर भी निर्भर करती है। यदि पुर्नभुगतान प्रक्रिया को सरल और लचीला बनाया जाए, तो विद्यार्थियों की वित्तीय कठिनाइयाँ कम होंगी और शिक्षा ऋण योजनाएँ अधिक प्रभावी बन सकेंगी।

निष्कर्ष – प्रस्तुत शोध-पत्र में इंदौर जिले के पाँच प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकोंकृस्टेट बैंक ऑफ इंडिया, पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, केनरा बैंक और कॉर्पोरेशन बैंक की शिक्षा ऋण योजनाओं की पुर्नभुगतान प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश विद्यार्थियों ने समय पर पुर्नभुगतान किया है। लगभग 68% विद्यार्थियों ने नियमित किस्तों का भुगतान किया, जबकि 22% विद्यार्थियों ने आंशिक विलंब से भुगतान किया और 10% विद्यार्थियों को गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। बैंकवार विश्लेषण से पता चला कि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया और बैंक ऑफ बड़ौदा के विद्यार्थियों ने अपेक्षाकृत बेहतर पुर्नभुगतान किया, जबकि कॉर्पोरेशन बैंक और केनरा बैंक में कठिनाइयाँ अधिक पाई गईं।

पुर्नभुगतान प्रवृत्तियाँ विद्यार्थियों की आय, रोजगार स्थिति और ब्याज दरों से गहराई से जुड़ी हुई हैं। जिन विद्यार्थियों को शीघ्र रोजगार मिला, उन्होंने समय पर पुर्नभुगतान किया, जबकि निम्न आय वर्ग के विद्यार्थियों को कठिनाइयाँ अधिक रहीं। ब्याज दरों की स्थिरता और लचीलापन विद्यार्थियों की संतुष्टि और पुर्नभुगतान क्षमता को सुदृढ़ करता है।

इस प्रकार, अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा ऋण योजनाओं की सफलता केवल ऋण वितरण तक सीमित नहीं है, बल्कि पुर्नभुगतान की प्रवृत्तियों पर भी निर्भर करती है। यदि पुर्नभुगतान प्रक्रिया को सरल और लचीला बनाया जाए, तो विद्यार्थियों की वित्तीय कठिनाइयाँ कम होंगी और शिक्षा ऋण योजनाएँ अधिक प्रभावी बन सकेंगी।

नीति-निहितार्थ:

- आय-आधारित पुर्नभुगतान मॉडल अपनाया जाना चाहिए।
- ब्याज दरों को स्थिर और पारदर्शी बनाया जाए।
- पुर्नभुगतान प्रक्रिया को सरल और लचीला बनाया जाए।
- आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए विशेष राहत योजनाएँ लागू की जाएँ।
- ग्रामीण और निम्न आय वर्ग के विद्यार्थियों तक शिक्षा ऋण योजनाओं का प्रचार-प्रसार बढ़ाया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. झा, आर. (1974). भारत में उच्च शिक्षा के वित्तीय स्रोत. नई दिल्ली : कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग।
2. रानी, गीथा. (2000). उच्च शिक्षा में ० प्रवृत्तियाँरू भारतीय परिप्रेक्ष्य. जर्नल ऑफ एजुकेशनल फाइनेंस, 25(3), 45-62।
3. नायर, पी., एवं गोपीनाथन, एस. (2008). शिक्षा ऋण और सामाजिक समानता: निम्न आय वर्ग के विद्यार्थियों का अध्ययन. इंडियन जर्नल ऑफ सोशल डेवलपमेंट, 12(2), 89-104।
4. दीवान, आर., एवं शर्मा, आर. (2013). सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक और छात्र ऋण की उपलब्धता. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बैंकिंग स्टडीज, 8(1), 112-128।
5. कुमार, एस. (2015). ग्रामीण और शहरी भारत में शिक्षा ऋण का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव. इकॉनॉमिक रिव्यू, 34(4),2 0 1 - 220।
6. शर्मा, वी. (2016). शिक्षा ऋण योजनाओं और रोजगार क्षमता का संबंध. हायर एजुकेशन क्वार्टरली, 70(2), 155-174।
7. गुप्ता, आर. (2017). शिक्षा ऋण पुर्नभुगतान की चुनौतियाँ: एक तुलनात्मक अध्ययन. जर्नल ऑफ फाइनेंशियल इन्क्लूजन, 5(3), 77-95।
8. मिश्रा, पी. (2018). मध्यमवर्गीय विद्यार्थियों में शिक्षा ऋण और पुर्नभुगतान प्रवृत्तियाँ. इंडियन जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन, 14(1), 33-52।
9. सिंह, ए. (2019). शिक्षा ऋण पुर्नभुगतान प्रणालियों की वैश्विक तुलना. इंटरनेशनल रिव्यू ऑफ एजुकेशन पॉलिसी, 11(2), 99-118।
10. वर्मा, के. (2020). विद्यार्थियों की संतुष्टि और पुर्नभुगतान प्रक्रिया. जर्नल ऑफ बैंकिंग एंड एजुकेशन, 9(4), 211-229।
11. राव, एम. (2020). सार्वजनिक बैंक और उच्च शिक्षा वित्तपोषण. इंडियन इकॉनॉमिक जर्नल, 68(1), 45-63।
12. पटेल, डी. (2021). इंदौर जिले में शिक्षा ऋण पुर्नभुगतान का अध्ययन. जर्नल ऑफ रीजनल स्टडीज, 15(2), 134-150।
13. चौधरी, एन. (2021). शिक्षा ऋण लाभार्थियों का पुर्नभुगतान व्यवहार. जर्नल ऑफ फाइनेंस एंड डेवलपमेंट, 19(3), 87-104।
14. मेहता, आर. (2022). ब्याज दर सुधार और पुर्नभुगतान क्षमता. इंडियन बैंकिंग रिव्यू, 27(1), 56-72।
15. अय्यर, एस. (2022). सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक और पुर्नभुगतान प्रवृत्तियाँ. जर्नल ऑफ सोशल पॉलिसी स्टडीज, 18(2), 144-162।
16. बनर्जी, टी. (2023). शिक्षा ऋण और युवाओं में पुर्नभुगतान व्यवहार. जर्नल ऑफ इकॉनॉमिक डेवलपमेंट, 31(3), 201-220।
17. जोशी, पी. (2023). एसबीआई और पीएनबी शिक्षा ऋण पुर्नभुगतान योजनाओं का तुलनात्मक विश्लेषण. इंडियन जर्नल ऑफ बैंकिंग रिसर्च, 22(4), 98-115।
18. कुलकर्णी, एच. (2024). शहरी भारत में शिक्षा ऋण पुर्नभुगतान: इंदौर का एक अध्ययन. जर्नल ऑफ अर्बन स्टडीज, 29(1), 65-82।
19. सक्सेना, आर. (2024). शिक्षा ऋण पुर्नभुगतान और वित्तीय समावेशन. जर्नल ऑफ इन्क्लूसिव फाइनेंस, 12(2), 33-49।
20. तिवारी, आर. (2025). सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक और शिक्षा ऋण पुर्नभुगतान का तुलनात्मक अध्ययन. जर्नल ऑफ अकादमिक रिसर्च, 17(1), 121-140।